INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

CTET

(CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

जूनियर लेवल (कला वर्ग)

HANDWRITTEN NOTES

भाग-1 हिंदी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

जूनियर स्तर (कला वर्ग)

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।

भाग – I हिंदी (I&II)

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (जूनियर स्तर) (कला वर्ग)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (जूनियर स्तर) (कला वर्ग)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/cs2iro

Online Order करें - https://rb.gy/gejnn0

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2024)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	शब्द – भेद • तद्भव एवं तत्सम • देशज • विदेशज	1
2.	संज्ञा	4
3.	सर्वनाम	9
4.	विशेषण	11
5.	क्रिया	13
6.	अव्यय (अविकारी शब्द)	15
7.	संधि	19
8.	समास	26
9.	कारक	41
10.	लिंग	42
11.	वचन	45
12.	विलोम शब्द	47
13.	शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	62
14.	पर्यायवाची शब्द	73
15.	उपसर्ग	85

16.	प्रत्यय	90
17.	शब्द शुद्धि	98
18.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	104
19.	अपठित गद्यांश	118
20.	अपठित पद्यांश	129
	शिक्षण विधियां	
1.	अधिगम एवं अर्जन	136
2.	भाषा शिक्षण के सिद्धांत	140
3.	भाषा के कार्य एवं इसके विकास में बोलने व सुनने की भूमिका	143
4.	भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका	145
5.	भाषायी विविधता वाले कक्षा - कक्ष की समस्याएं	157
6.	भाषा कौशल	159
7.	भाषा बोध (सुनना , बोलना , पढ़ना एवं लिखना) में प्रवीणता का मूल्यांकन	164
8.	शिक्षण सहायक सामग्री	169
9.	उपचारात्मक शिक्षण	172

हिन्दी

अध्याय – 1

शब्द – भेद

तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज

तत्सम एवं तद्भवशब्द अकेले और कभी दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अपना अर्थ प्रकट करते हैं। इन्हें हम दो रूपों में पाते हैं – एक तो इनका अपना बिना मिलावट का रूप है, जिसे संस्कृत में प्रकृति या प्रातिपादिक कहते हैं और दूसरा वह, जो कारक, लिंग, वचन, पुरुष और काल बताने वाले अंश को आगे-पीछे लगाकर बनाया जाता है, जिसे **पद** कहते हैं। यह वाक्य में दूसरे शब्दों से मिलकर अपना रूप झट सँवार लेता है।

शब्दों की रचना

(1) ध्वनि और

(2) अर्थ के मेल से होता है।

एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को **शब्द** कहते हैं,

जैसे – लड़की, आ, मैं, धीरे, परंतु इत्यादि।

अतः शब्द मूलतः ध्वन्यात्मक होंगे या वर्णात्मक।

किंतु, व्याकरण में ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का अधिक महत्त्व है। वर्णात्मक शब्दों में भी उन्हीं शब्दों का महत्त्व है, जो सार्थक है, जिनका अर्थ स्पष्ट और सुनिश्चित है। व्याकरण में निरर्थक शब्दों पर विचार नहीं होता।

सामान्यतः शब्द दो प्रकार के होते हैं – सार्थक और निरर्थक।

सार्थक शब्दों के अर्थ होते हैं और निरर्थक शब्दों के अर्थ नहीं होते। जैसे-'पानी' सार्थक शब्द है और 'नीपा' निरर्थक शब्द, क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

उत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के **चार भेद / प्रकार** है ।

शब्द – भेद

बनावट के आधार पर

रूढ़ | यौगिक | योग रूढ़

उत्पत्ति के आधार पर

तत्सम | तद्भव | देशज | विदेशी | संकर

परम्परागत तत्सम

जो शब्द संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध है, वे परंपरागत तत्सम कहे जाते हैं।

निर्मित तत्सम शब्द

" जो शब्द नए विचारों और व्यापारों की अभिव्यक्ति करने के लिए संस्कृत के व्याकरण के अनुसार समय – समय पर बना लिए गए हैं "

1. तत्सम : ' तत्सम ' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है – 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का –त्यों प्रयोग में लाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे – अग्नि,वायु, माता, पिता, प्रकाश , पत्र सूर्य आदि।

2. तद्भव शब्द – ' तद्भव ' शब्द का अर्थ है- ' उससे होना ' ; अर्थात् वे शब्द जो ' स्त्रोत भाषा ' के शब्दों से विकसित हुए हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि – प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी तक पहुंचे है , अत : इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है , जैसे – 'दही' शब्द 'कान्ह' शब्द (कृष्ण) से विकसित होकर हिन्दी में आए हैं ऐसे शब्दों को '**तद्भव शब्द**' कहा जाता है ।

तद्भव	तत्सम
सोना	स्वर्ण
सोलह	षोड्स
कूची	कूर्चिका

मयूर	मोर
पिय	प्रिय
किवाड़	कपाट
कान	कर्ण
खेत	क्षेत्र
घर	गृह
गाय	गौ
बात	वार्ता
चंदा	चन्द्रमा
अमिय	अमृत
माता	मातृ
काठ	काष्ठ
लोहा	लौह
बन्दर	वानर
दूध	दुग्ध

3. **देशज / देसी :** 'देशज' (देश+ज) शब्द का अर्थ है- देश में जमा । अतः ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं ; जैसे – थैला , गड़बड़ , टट्टी , पेट , पगड़ी , लोटा ,टाँग , ठेठ आदि ।

4. **विदेशज / विदेशी / आगत :** ' विदेशज ' (विदेश+ज) शब्द का अर्थ है –' विदेश में जन्मा ' । 'आगत' शब्द का अर्थ है आया हुआ हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे है जो हैं तो विदेशी मूल के, पर परस्पर संपर्क के कारण यहाँ प्रचलित हो गए हैं । अतः अन्य देश की भाषा से आए हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यो-का-त्यों अपना लिया गया है (ऑर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट इत्यादि) और कुछ को हिन्दीकरण (तद्भवीकरण) कर के अपनाया गया है ।

(ऑफिसर > अफसर, लैनटर्न > लालटेन, हॉस्पिटल > अस्पताल, कैप्टेन > कप्तान, गोडाउन > गोदाम, जैन्युअरि > जनवरी) इत्यादि ।

अरबी शब्द

अक्ल, अज़ब, अतएब, अजीब, असर, अहमक, अल्ला, अदा, आदत, आदमी, आखिर, आसार, इलाज, इनाम, इस्तीफा, इज्जत, इजलास, इमारत, ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औलाद, औसत, कर्ज, कमाल, कब्र, कदम, कसूर, कसर, कसम, कसरत, किला, किस्त, किस्मत, किस्सा, किताब, कुर्सी, खत, खत्म, खबर, खराब, ख्याल, गरीब, गैर, जलसा, जिस्म, जाहिल, जहाज, जवाब, जनाब, जालिम, जिहन, तकदीर, तकिया, तरफ, तमाम, तकाजा, तुर्की, तजुरबा, तमाशा, तारीख, दगा, दफा, दफ्तर, दवा, दल्लाल, दावा, दान, दावत, दाखिल, दिक,दीन, दुआ, दुकान, नकद, नकल, नहर, नशा, नतीजा, चाल, फकीर, फायदा, फैसला, बाकी, मवाद, मदद, मल्लाह, मजबूर, मरंजी, मशहूर, मजमून, मतलब, मालूम, मामूली, मात, मानी, मिसाल, मुद्दई, मुसाफिर, मुंसिफ, मुकदमा, मौका, मौलवी, मौसम, यतीम, राय, लफ्ज, लहजा, लायक, लिफाफा, लियाकत, लिहाज, वकील, वहम, वारिस, शराब, हक, हद, हरामी, हमला, हवालात, हाजिर, हाशिया, हल, हाकिम, हिसाब, हिम्मत, हैजा, हौसला इत्यादि।

फारसी शब्द

अदा, अफसोस, आतिशबाजी, आबरू, आबदार, आमदनी, आराम, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कद (कद्द भी), किशमिश, कुश्ती, कमीना, कबूतर कूचा, खुद, खामोश, खुश, खुराक, खूब, खरगोश, गज, गर्द,, गुम, गल्ला, गोला, गुलबन्द, गरम, गिरह, गवाह, गुल, गुलाब, गोश्त, चरखा, चश्मा, चादर चाबुक, चिराग, चेहरा, चूँकि, चाशनी, जहर, जंग, जबर, जादू, जिन्दगी, जागीर, जान, जीन, जुरमाना, जोर, जिगर, जोश, तबाह, तनख्वाह, तरकश, तमाशा, ताक, ताजा, तीर, तेज, दरबार, दंगल, दस्तूर, दीवार, दुकान, दिलेर, देहात, दवा, दिल नापसंद, नाव, नामर्द, पलक, पलंग, पारा, पुल, पेशा, पैमाना, बहरा बीमार, बेहूदा, बेवा, बेरहम, मजा, मलीदा, मरहम, मलाई, मादा, माशा, मुफ्त, मीना, मुर्गा, मोर्चा, याद, यार, रंग, राह, रोगन, लगाम, वापिस शादी, शोर, सरकार, सरदार, सरासर, सितार, इत्यादि।

पुर्तगाली शब्द

Alcatro	अलकतरा
Altionet	आल्पिन
Almario	अलमारी
Bolde	बाल्टी
Fita	फीता
Tobacco	तम्बाकू

संकर (मिश्रित) शब्द

हिन्दी में ऐसे भी शब्द हैं, जो दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बन गये हैं; नीचे देखें

(क) संस्कृत और हिन्दी के शब्दों के मेल से निर्मित-उप-' बोली, भोजन-गाड़ी, रात्रि-ड़उड़ान आदि। -

(ख) संस्कृत और फ़ारसी के शब्दों के मेल से निर्मित- विज्ञापनबाज़ी, छायादार, लोकशाही आदि।

(ग) फारसी और हिन्दी- भाषा के शब्दों के मेल से निर्मित- कमर-पट्टी, ख़रीदना, जेब-कतरा, बेडौल आदि।

(घ) अरबी और हिन्दी-अख़बारवालां, अजाएबघर हवा-चक्की, मालगाड़ी, किताबंघर, कलम-चोर "
(ङ) तुर्की और हिन्दी-तोप-गाड़ी, तोप-तलंवार आदि।
(च) अरबी और फारसी-अक़लमन्दं गोताख़ोर, तहसीलदार फ़िजूल-ख़र्च आदि।
(छ)हिन्दी और फारसी-कटोरदान, चमकंदार, मसालेदार किरायेदार, छापाख़ानां, थानेदार, पंचायतनामा आदि।
(ज)अँगरेज़ी और हिन्दी-टिकट-घेर/ ड़बल रोटी, रेलगाड़ी

अलार्म-घड़ी, सिनेमा-घर, रेलवे-भाड़ा, पुलिस-चोकी, डाक-घर आदि।

(झ) हिन्दी और अँगरेज़ी-कपड़ा-मिल, जाँच-कमीशन, लाठी-चार्ज आदि।
(ञ) अँगरेज़ी और फारसी- जेलख़ाना, सील-बन्द आदि।

अंग्रेजी शब्द

अफसर	officer	(ऑफीसर)
इंजन	Engine	(एंजिन)
अस्पताल	Hospital	(हास्पिटल)
डाक्टर	Doctor	(डॉक्टर)
कप्तान	captain	(कैप्टन)
थेटर, ठेटर	Theatre	(थियेटर)
मील	Mile	(माइल)
बोतल	Bottle	(बाटल)
टेसन	Station	(स्टेशन)
इस्कूल	School	(स्कूल)
बुकसट	Bushshirt	(बुश्शर्ट)
टीन	tin	(टिन)
पुलिस	police	(पोलिस)
इनिस्पेट्टर	Inspector	(इंसपेक्टर)
कलेट्टर	Collector	(कलेक्टर)

तुर्की शब्द

उर्दू, कज्जाक, काबू, कालीन, कुली, कुर्की, कैंची, चकमक, चमचा, चिक, ज़ुगुल, चेचक, ज़ालिम, तमगा, तलाश, लोप, बहादुर, बेगम, मुगल, लफंगा।

रचना अथवा बनावट के अनुसार शब्दों का वर्गीकरण

शब्दों अथवा वर्णों के मेल से नये शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'रचना या बनावट' कहते हैं। कई वर्णों को मिलाने से शब्द बनता है और शब्द के खंड को 'शब्दांश' कहते हैं।

जैसे – 'राम में शब्द के दो खंड है – 'रा' और 'म'। इन अलग-अलग शब्दांशों का कोई अर्थ नहीं है। इसके विपरीत, कुछ ऐसे भी शब्द है, जिनके दोनों खंड सार्थक होते है, जैसे – विद्यालय। इस शब्द के दो अंश है – 'विद्या' और 'आलय'। दोनों के अलग-अलग अर्थ हैं।

इस प्रकार, बनावट के विचार से शब्द के तीन प्रकार हैं –

(1) रूढ़,

(2) यौगिक और

(3) योगरूढ़।

रूढ़ शब्द

जिन शब्दों के खंड सार्थक न हों, उन्हें रूढ़ कहते हैं, जैसे – नाक, कान, पीला, झट, पर यहाँ प्रत्येक शब्द के खंड – जैसे, 'ना' और 'क', 'का' और 'न' – अर्थहीन है।

यौगिक शब्द

ऐसे शब्द, जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके खंड सार्थक होते हैं, यौगिक कहलाते हैं। दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के योग से यौगिक शब्द बनते हैं,

जैसे – आग-बबुला, पीला-पन, दूध-वाला, छल-छंद, घुड़-सवार इत्यादि। यहाँ प्रत्येक शब्द के दो खंड है और दोनों खंड सार्थक है।

योगरूढ़ शब्द

ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते हैं, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं।

मतलब यह कि यौगिक शब्द जब अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगे, तब वे 'योगरूढ़' कहलाते हैं,

जैसे – लंबोदर, पंकज, चक्रपाणि, जलज इत्यादि। 'पंक+ज' का अर्थ है – कीचड़ से (में) उत्पन्न, पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जाएगा, अतः 'पंकज' योगरूढ़ है।

अध्याय – 6

अव्यय (अविकारी शब्द)

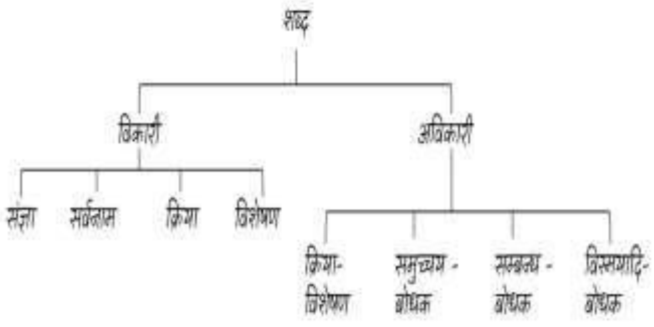

अविकारी या अव्यय शब्द

परिभाषा- "न व्ययेति इति अव्ययम्" के अनुसार अविकारी या अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिन शब्दों का रूप (लिंग, वचन, क्रिया, विभक्ति में) परिवर्तन नहीं होता अर्थात इन शब्दों पर काल, वचन, लिंग, पुरुष आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। ये शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण कहलाते हैं। जैसे- अन्दर बाहर, अनुसार, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, परन्तु आदि। इनके अतिरिक्त अनेक उदाहरण हैं, दिए गए शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं किया जा सकता जैसे अन्दर का अन्दरी, अन्दरे, अन्दरा रूप नहीं बन सकता। अतः अव्यय या अविकारी शब्द है। अविकारी शब्दों को सुविधा, स्वरूप और व्यवस्था की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है।

I. क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण अविकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. वह प्रतिदिन पढ़ता है
2. कुछ खा लो।
3. मोहन सुन्दर लिखता है।
4. घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों में प्रतिदिन कुछ सुन्दर, तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहें हैं। अतः ये शब्द क्रियाविशेषण हैं। क्रिया-विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

(i) कालवाचक (ii) स्थानवाचक
(iii) परिमाणवाचक (iv) रीतिवाचक

कालवाचक- जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. सीता कल आएगी।
2. तुम अब जा सकते हो।
3. दिन भर पानी बरसता रहा।
4. तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

वाक्यों में कल, अब, दिनभर, दिन-प्रतिदिन शब्द क्रिया की काल सम्बंधित विशेषता बतला रहे हैं अतः काल वाचक क्रिया-विशेषण हैं।

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराएँ उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. वह पेड़ के नीचे बैठा है।
2. तुम आगे चलो।
3. हमारे आस-पास रहना।
4. इधर-उधर मत भागो।

इन वाक्यों में आगे, आस-पास, नीचे, इधर-उधर, स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं। जो कि क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता बता रहे है ।

परिमाण वाचक- जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे अर्थात नाप-तोल बतलाते हैं, वे परिमाण वाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. उतना खाओं, जितना आवश्यक हो।
2. कुछ तेज चलो।
3. रमेश बहुत बोलता है।
4. तुम खूब खेलो।

आदि उदाहरणों में उतना, जितना, कुछ, बहुत, खूब आदि परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण अव्यय हैं।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण - जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चले उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते है-रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं-

प्रकारात्मक- धीरे-धीरे अचानक, अनायास, संयोग से, एकाएक, सहसा, सुखपूर्वक शान्ति से, हँसता हुआ, मन से, धड़ाधड़ झटपट, आप ही आप, शीघ्रता से, ध्यानपूर्वक, जल्दी, तुरन्त आदि।

निश्चयात्मक- अवश्य, ठीक, सचमुच, अलबत्ता, वास्तव में, बेशक, निःसंदेह आदि।

अनिश्चयात्मक- कदाचित्, शायद, सम्भव है, बहुत करके, प्राय; अक्सर आदि।

स्वीकारात्मक- हाँ, ठीक, सच, बिलकुल, सही, बिलकुल सही, जी हाँ, आदि।

कारणात्मक (हेतु)- इसलिए, अतएव, क्यों किसलिए, काहे को, अतः आदि कारणात्मक या हेतु क्रिया-विशेषण हैं।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

निषेधात्मक- न, ना, नहीं, मत, बिलकुल नहीं, हरगिज नहीं, जी नहीं आदि।

आवृत्यात्मक- गटागट, फटाफट, खुल्लमखुल्ला आदि।

अवधारक - ही, तो, भी, तक, भर, मात्र, अभी, कभी, जभी, तभी, आदि।

क्रिया विशेषणों की रचना

मूल क्रिया विशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रिया-विशेषण शब्दों की रचना होती है। जिन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। ये निम्न प्रकार हैं-

संज्ञा से- प्रेमपूर्वक, कुशलतापूर्वक, दिन-भर, रात तक, सवेरे, सायं, आदि संज्ञा शब्दों के योग से बने हैं।

सर्वनाम से- यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, जिस पर, ज्यों, त्यों, जैसे-वैसे, जहाँ-वहाँ आदि।

विशेषण से- धीरे, चुपके, इतने में, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, पहले, दूसरे प्रायः बहुधा आदि।

क्रिया से- चलते-चलते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, करते हुए, लौटते हुए, जाते-जाते आदि।

शब्दों की पुनरुक्ति से- हाथों-हाथ, बीचों-बीच, घर-घर, साफ-साफ, कभी-कभी, क्षण-क्षण, पल-पल, धड़ाधड़ आदि।

विलोम शब्दों के योग से रात-दिन, साँझ-सवेरे, देश-विदेश, उल्टा-सीधा, छोटा-बडा, आदि।

तः प्रत्याना- सामान्यतः, वस्तुतः, साधारणतः, येन केन, प्रकारेण (जैसे-तैसे) आदि।

बिना प्रत्ययान्त के- कभी-कभी, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण आदि के बिना किसी प्रत्यय के, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं- जैसे-

संज्ञा (1) तू सिर पड़ेगा।
(2) तुम खाक करोगे।

सर्वनाम (1) यह क्या हुआ।
(2)तूने यह क्या किया।

विशेषण
(1) अच्छा हुआ।
(2) घोड़ा अच्छा चलता है।

पूर्व कालिक क्रिया- सुनकर चला गया। आदि वाक्य । क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

परसर्ग जोड़कर- कुछ क्रिया-विशेषणों के साथ को से, के, की, पर आदि विभक्तियाँ भी लगती हैं और इनके योग से भी क्रिया-विशेषणों की रचना होती है।

जैसे- 1. कहाँ से आ रहे हो?
2. यहाँ से क्यों जा रहे हो?
3. कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ।
4. गुरु जी से नम्रता से बोले।
5. आगे से ऐसा मत करना।

6. रात को देर तक मत पढ़ना। आदि परसर्गों की सहायता से बने हुए वाक्य क्रिया-विशेषण का कार्य कर रहे हैं।

पदबन्ध- पूरे वाक्यांश क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- 1. सवेरे से शाम तक।
2. धन-मन-धन से।
3. जी-जान से।
4. पहाड़ की तलहटी में।
5. आपके आदेशानुसार। आदि पदबन्ध क्रिया-विशेषण हैं।

2. समुच्चय बोधक (योजक)

परिभाषा- जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों, पदबन्धों या वाक्यों को मिलाते हैं वे समुच्चय बोधक या योजक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे- 1. वह निकम्मा है इसीलिए सब उसे दुत्कारते हैं
2. यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य उत्तीर्ण होगे।
3. राम यहाँ रहे या कहीं और।
4. यह मेरा घर है और यह मेरे मित्र का।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द समुच्चय या योजक अव्यय हैं क्यों कि ये वाक्यों को आपस में जोड़ रहे हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय के दो भेद हैं-
1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक
2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक

वे अव्यय जो समान घटकों (शब्दों, वाक्यों, या वाक्यांशों) को परस्पर मिलाते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

समानाधिकरण अव्यय के भेद है-

(i) संयोजक
(ii) विकल्प बोधक
(iii) भेदबोधक

- **शिष्ट** – विनीत , सौम्य , शालीन , सभ्य , नम्र।
- **शहद** – पुष्परस , मधु , आसव , रस , मकरंद , सुषमा ।
- **सम्पूर्ण** – निखिल , अखिल , निश्शेष , सकल।
- **समूह** – वृन्द , पूँज ।
- **घटा** – कादम्बिनी , धनाली , धनावली , मेघमाला , मेघाली ।
- **केसर** – अंबर , कश्मीर , कुसुंश , जाफरान , पिण्याक , सौरभ , हरिचंदन ।
- **कूट** – छल , व्यंग्य , जटिल , जाली ।
- **कीचड़** – कदर्भ , पंक ।
- **ओप** – आब , कांति , चमक ।
- **आगार** – खान , भंडार , संग्रह , स्त्रोत ।
- **अनार** – दाड़िम , शुकप्रिय , शुकोदन ।
- **अपार** – अनंत , असीम , निस्सीम ।
- **अनुकूल** – अनुरूप , अनुसार , मुआफिक , संगत ।
- **अथ** – आदि , प्रारंभ , आरंभ ।
- **अनुकरण** – अनुगमन , अनुवर्तन , अनुसरण , नकल ।
- **अनूठा** – अनोखा , निराला , बेजोड़ , विचित्र , विलक्षण ।
- **अग्राह्य** – अनर्गल , अनाहार्य , अपाच्य , अस्वीकार्य, निषिद्ध ।
- **अवनति** – अपकर्ष , ह्रास ।

अध्याय – 15

उपसर्ग

- **संस्कृत उपसर्ग** : - संस्कृत व्याकरण में 22 उपसर्ग होते हैं ।

1. **अति** :- (अधिक , परे)
   बिना संधि – अतिक्रमण , अतिशय , अतिसार , अतिमानव , अतिव्याप्ति ।
   दीर्घ संधि के उदा. – अतीन्द्रिय , अतीत , अतीव (अति + इव)
   यण् संधि के उदा.- अत्यंत (अति +अंत), अत्यल्प (अति+अल्प), अत्युक्ति (अति +उक्ति)।
   प्रत्यय से सम्बन्धित- अतिशयिक , आतिरेक्य (अति + रेक + य – प्रत्यय) आत्यंतिक ।
2. **अधि :- (ऊपर , अधिक)**
   बिना संधि – अधिकरण , अधिगम, अधित्यका , अधिनायक, अधिनियम (अधि + नि +यम), अधिपति , अधिमास , अधिराज , अधिशासी , अधिसूचना ।
   दीर्घ संधि – अधीक्षण (अधि +ईक्षण), अधीन (अधि+इन), अधीश (अधि +ईश)।
   यण् संधि – अध्ययन (अधि+अयन), अध्यापक , अध्याय ।
   व्यंजन संधि – अधिष्ठाता (अधि+स्थाता), अधिष्ठान (अधि + स्थान)
   प्रत्यय से सम्बंधित – आधिकारिक (अधिकार+इक), आधिपत्य , आध्यात्मिक (अध्यात्म +इक)।
3. **अभि :- (सामने , पास)**
   बिना संधि – अभिज्ञ, अभिज्ञा , अभिनय , अभिन्यास, अभिप्राय , अभिभाषण , अभिभूत , अभिमन्यु , अभिमुख, अभियान , अभिराम , अभिलाषा , अभिवादन, अभिशंसा, अभिशाप , अभिसार ।
   दीर्घ संधि – अभीप्सित (अभि +ईप्सित), अभीष्ट (अभि + इष्ट) ।
   यण् संधि – अभ्यंतर (अभि + अंतर), अभ्यर्थी (अभि+ अर्थी), अभ्यागत , अभ्यास, अभ्युत्थान (अभि+उद्+स्थान), अभ्युदय(अभि +उद्+अय)।
   व्यंजन संधि – अभिषेक (अभी+सेक)
   प्रत्यय सम्बंधित – आभिजन (अभिजन+अ), अभिजात्य(अभिजात +य), आभ्यंतरिक ।
4. **नि :- (बड़ा , विशेष , निषेधात्मक)**
   बिना संधि – निकर , निकाय , निकृष्ट , निगम, निदान , निधन , निधि (नि+धि) , निपट , निपात, निगुण , निबंध, नियंत्रण , नियम ,निरत , निरूपण, निरोध ।
   यण् संधि – न्यस्त (नि+अस्त), न्याय (नि + आय), न्यास (नि + आस), न्यून (नि + ऊन)।

व्यंजन संधि – निषेध (नि+सेध), निष्ठा (नि+स्था)

प्रत्यय सम्बंधित -नैकट्य(नि+कट +य), नैदानिक (नि+दान+इक)

5. **प्रति :- (विपरित, प्रत्येक , ओर)**
बिना संधि – प्रतिकूल , प्रतिक्रिया , प्रतिक्षण , प्रतिघात, प्रतिज्ञा , प्रतिदिन , प्रतिनिधि , प्रतिनियुक्ति , प्रतिबन्ध, प्रतिभा , प्रतिमा , प्रतिरूप, प्रतिवाद , प्रतिवादी , प्रतिशत, प्रतिस्पर्धा , प्रतिहिंसा ।
दीर्घ संधि – प्रतीक (प्रति+इक), प्रतिक्षा (प्रति+ईक्षा)
यण संधि – प्रत्यक्ष (प्रति+अक्ष), प्रत्यपकार (प्रति+उप +कार), प्रत्यर्पण , प्रत्याघात , प्रत्यालोचना, प्रत्यावर्तन (प्रति + आ + वर्तन), प्रत्याशी , प्रत्युत्तर (प्रति + उद् + तर) , प्रत्युत्पन्न, प्रत्युपकार, प्रत्येक।
व्यंजन संधि- प्रतिषेध (प्रति+सेध -रोक), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठित (प्रति + स्थित)।
प्रत्यय सम्बंधित – प्रातिनिधिक, प्रातिपदिक (प्रतिपद + इक)

6. **परि :-(चारों ओर , पास)**
बिना संधि – परिकल्पना , परिक्रमा , परिग्रह , परिचारिका, परिजन , परिज्ञान , परितोष , परिधान , परिधि , परिपूर्ण , परिवर्तन , परिमार्जन, परिवार , परिवेश , परिशिष्ट ।
दीर्घ संधि – परीक्षण(परि+ईक्षण), परीक्षा (परि + ईक्षा)
यण् संधि – पर्यंक (परि + अंक), पर्यटन(परि + अटन), पर्यवसान (परि + अव + सान), पर्यवेक्षण (परि + अव + ईक्षण), पर्याप्ति (परि + आप्त), पर्यावरण (परि + आ + वरण), पर्युषण (परि + उषण)।
व्यंजन संधि – परिणय (परि + नय), परिमाण (परि+मान), परिष्कार (परि + कार), परिष्कृत (परि + कृत)।

7. **वि :- (विशेष , भिन्न , अभाव)**
बिना संधि – विधान , विनय , विनीत , विकट , विकराल, विकल , विकार , विकास , विकिरण , विकीर्ण , विकृत , विक्रम , विख्यात , विग्रह , विघटन, विचलित , वितान , वितृष्णा, विद्रोह , विधवा , विधान, विपुल , विप्लव , विभ्रम, विरस, विराम , विरुद्ध , विरेचन , विलम्ब , विलोम , विवेक, विशेष , विश्लेषण, विहार , ।

दीर्घ संधि – व्यंजन (वि+अंजन), व्यग्र (वि +अग्र), व्यक्ति (वि+अक्ति), व्यतिरेक (वि + अति + रेक), व्यभिचार (वि+अभि+चार), व्यय (वि+अय)

व्यवसाय (वि+अव+साय), व्यष्टि (वि+अष्टि), व्यसन (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि+आ+कुल), व्याधि (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि + आ + कुल), व्याधि (वि + आधी), व्यापार (वि + आ + पार)।

8. **अनु :- (पीछे, समान)**
बिना संधि – अनुकरण , अनुकूल , अनुक्रम , अनुगामी , अनुग्रहीत , अनुचर ,अनुज (अनु+ज), अनुज्ञप्ति , अनुज्ञा (अनुमति), अनुताप , अनुदान, अनुपूरक , अनुबंध , अनुप्रास, (अनु+प्र+आस) , अनुबंध , अनुभव , अनुमान , अनुयायी , अनुराग, अनुरूप , अनुवाद , अनुशंसा , अनुशासन , अनुसार ,।
दीर्घ संधि – अनूदित (अनु +उद्+इत)
यण संधि – अन्वय (अनु+अय), अन्वीक्षण (अनु+ईक्षण), अन्वीक्षा (अनु+ईक्षा), अन्वेषक (अनु+एषक), अन्वेषण (अनु+एषण)।

व्यंजन संधि – अनुच्छेद (अनु+छेद), अनुष्ठान (अनु+स्थान)
प्रत्यय से सम्बन्धित -आनुपातिक (अनुपात +इक), अनुवंशिक, अनुषांगिक (अनु+संग+इक), आन्वयिक (अनु+अय+इक)।

9. **सु** :- (अच्छा , सरल)
बिना संधि – सुअवसर (सु+अव+सर), सुकर्म , सुगंध , सुगति , सुचरित्र , सुजन , सुदिन , सुदूर, सुदृढ़, सुनिश्चय (सु+निस्+चय),सुपरिचित , सुपाच्य, सुपुत्र , सुमन , सुमार्ग , सुरति , सुलभ, सुविधा , सुव्यवस्थित , सुशील ।
यण संधि :- स्वच्छ (सु+अच्छ) , स्वंय (सु+अयं), स्वल्प (सु+अल्प), स्वस्ति (सु+अस्ति), स्वागत (सु+आ+गत)।
व्यंजन संधि – सुषमा (सु+समा) , सुषुप्त (सु+सुप्त)
प्रत्यय सम्बन्धित :- सौजन्य (सु+जन+य), सौभाग्य (सु+भाग+य), सौमनस्य (सु+मानस्+य) , सौमित्र (सु+मित्र+अ) ।

10. **अप** :-(बुरा , विपरित,अपवाद)
बिना सन्धि :- अपकर्म , अपकर्ष , अपकार , अपकीर्ति , अपभ्रंश , अपमान , अपयश , अपराध, अपरूप , अपवर्तन , अपव्यय , अपशकुन, अपशब्द, अपहरण ।
दीर्घ संधि- अपांग (अप+अंग), -स्वर संधि में अपवाद ।
गुण संधि – अपेक्षा (अप+ईक्षा) , अपेक्षित(अप+ईक्षित)।
प्रत्यय सम्बन्धित – आपराधिक (अप + राध + इक), आपेक्षिक (अप + ईक्षा + इक) , आवधिक (अव + धि + इक)।

11. **अपि :-** (निश्चय, किन्तु,भी)
बिना संधि – अपितु , अपिधान, अपिहित ।

12. **अव :- (नीचा , बुरा** , हीन , उपयुक्त भी)
बिना संधि – अवकाश , अवगत, अवगाहन, अवगुण, अवचेतन, अवज्ञा, अवतार, अवतीर्ण , अवधान, अवधारणा, अवधि, अवनति, अवबोध, अवमानना , अवरोध, अवरोह, अवलेह, अवलोकन, अवसर , अवसाद, अवस्था।
दीर्घ संधि – अवान्तार (अव+अंतर), अवाप्ति (अव+आप्ति)।

अध्याय – 16

प्रत्यय

परिभाषा:-

वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत मे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हे प्रत्यय कहते है। शब्दों में प्रत्यय लगाकर उसी शब्द से विभिन्न अर्थों को प्राप्त किया जा सकता हैं।

प्रत्यय वे शब्दांश होते हैं, जिनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता। वे जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं, उसके अर्थ को प्रभावित करते हैं।

प्रत्यय में संधि नियम लागू नहीं होता है।

हिन्दी में प्रत्यय दो प्रकार के होते है-

1. **तद्धित प्रत्यय**
2. **कृत / कृदंत प्रत्यय**

1. तद्धित प्रत्यय – जो प्रत्यय क्रिया के धातु – रूपों को छोड़कर अन्य शब्दों जैसे – संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम आदि के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हे तद्धित प्रत्यय कहते हैं तथा इनसे बने शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं ।

जैसे – बंगाल + ई = बंगाली

यहाँ 'ई' तद्धित प्रत्यय है क्योंकि यह बंगाल नामक संज्ञा के साथ मिलकर नया शब्द 'बंगाली' बना रहा है।

तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते हैं।

1. कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय
3. संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय
4. अप्रत्यय वाचक/संतान बोधक तद्धित प्रत्यय
5. ऊनतावचक / हीनता / लघुता वाचक तद्धित प्रत्यय
6. स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय

1) कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय – वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द के अंत मे जुड़कर कर्तावाचक शब्द का निर्माण करते हैं, कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय	मूल शब्द	तद्धितान्त
आरी	पूजा भीख	पुजारी भिखारी
एरा	घास बास ठाठ	घसेरा बसेरा ठठेरा
आरा	बनिज हत्या	बंजारा हत्यारा
आर	लोहा सोना चाम गाँव	लुहार सुनार चमार गंवार
इया	रस दुख छल	रसिया दुखिया छलिया
ई	भेद तेल	भेदी तेली
ची	नकल खजाना तोप	नकलची खजानची तोपची
दानी	पीक मच्छर	पीकदानी मच्छरदानी
दान	खान पीक	खानदान पीकदान
वान/बान	कोच गुण मेज धन	कोचवान गुणवान मेजबान धनवान
कार	संगीत पेश	संगीतकार पेशकार
वाला	काम फल दूध	कामवाला फलवाला दूधवाला
एडी	नशा गाँजा	नशेड़ी गंजेड़ी
ऊ	पेट नाक	पेटू नक्कू
हारा	लकड़ पानी	लकड़हारा पनिहारा
हेत	दंगा बरछा	दंगैत बरछैत

अध्याय – 19

अपठित गद्यांश

गद्यांश – 1

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :

हमलोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है । हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है । जो साहित्य अपने आप के लिए लिखा जाता है उसको क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्रय, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय-निधि है।

- 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है

  (1)दूसरों से आशा रखना
  (2)पयारा मुख अच्छा लगना
  (3)पराये मुख की अपेक्षा करना
  (4) ईश्वर का मुख

  उत्तर : - (1)

- कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ?

  (1)सेवा (2) भाषा
  (3)प्रयोग (4)हिंदी
  उत्तर : - (3)

- इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है

  (1) आशय (2) मतलब
  (3) धन (4) अभिप्राय
  उत्तर : - (3)

- कौनसा शब्द एकवचन हैं ?

  (1) विचारों (2) भाषाओं
  (3) अक्षय (4) मनुष्यों
  उत्तरः - (3)

- 'कीमत' की बहुवचन है ।

  (1) कीमती (2) कीमतों
  (3) किमतों (4) किम्मत
  उत्तर : - (4)

- 'माध्यम' का बहुवचन है ।

  (1)मध्यमा (2) माध्यमिक
  (3) मध्यम (4) माध्यमों
  उत्तर : - (4)

- 'अक्षय – निधि' का अर्थ है ।

  (1) बिना क्षय रोग
  (2) किसी का नाम
  (3) कभी खत्म न होने वाली सम्पत्ति
  (4) रोग रहित नहीं
  उत्तरः - (3)

गद्यांश – 2

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिएः

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुंचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें संदेह नहीं । लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अंधकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जो कि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बर्नैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद - प्रभृति विभिषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक लोला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटो की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता हमें सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगीनियाँ समूचे देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं । अतः कल्पना के भव्य महलो के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा ।

- वह शब्द बताइए जिसमें संधि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है

  (A) रंगीनियों (B) ध्वंसावशेषों
  (C)अधीरता (D)संप्रदायवाद
  उत्तरः - (B)

अध्याय - 2

भाषा शिक्षण के सिद्धांत

भाषा शिक्षण के उपागम

शिक्षण एक अतःक्रिया है जो शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य में पाठ्यक्रम के संदर्भ में होती है। शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, जिसका मुख्य उद्देश्य होता है छात्र का सर्वांगीण विकास करना।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के स्तर की प्रभावशीलता का निर्धारण इस आधार पर होता है कि पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस स्तर तक हुई है, छात्र के व्यवहार में परिवर्तन किस स्तर तक हुए हैं। उपरोक्त मानकों को अधिकतम प्राप्त करने के लिए शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया का प्रभावी सम्पादन होना आवश्यक है इसलिए शिक्षकों से यह अपेक्षा होती है कि वो प्रभावी शिक्षण उपागमों को अपनाये।

शिक्षण के उपागम वे माध्यम हैं जिनके द्वारा शिक्षक अपनी विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण कक्षा में करता है। इन माध्यमों को निम्न दो भागों में विभाजित करते हैं।

शिक्षण माध्यम

↓	↓
शिक्षण उपागम	शिक्षण विधियाँ
प्रभुत्ववादी उपागम	वाचन की विधियाँ
प्रजातान्त्रिक उपागम	लेखन की विधियाँ
हस्तक्षेपराहत उपागम	व्याकरण की विधियाँ

शिक्षण उपागम

प्रभुत्वावादी उपागम : यह उपागम शिक्षक केन्द्रित होता है इसलिए इसमें छात्र की भूमिका गौण या निष्क्रिय भी होती है इसलिए इसे अमनोवैज्ञानिक उपागम भी कहते हैं। इसके निम्न उदाहरण है

- व्याख्यान विधि
- प्रदर्शन विधि
- अनुवर्ग शिक्षण

प्रजातान्त्रिक उपागमः यह उपागम शिक्षक व शिक्षार्थियों के मध्य अन्तः क्रिया पर बल देता है जिससे भाषा शिक्षण व भाषायी दक्षता के विकास के प्रयास में शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों ही क्रियाशील रहते हैं इस उपागम के उदाहरण निम्न हैं

- प्रयोगशाला विधि
- प्रायोजना विधि
- अनुसंधान विधि

हस्तक्षेपरहित उपागम : यह उपागम छात्र केन्द्रित माना जाता है जिसमें शिक्षण योजनाओं का निर्धारण छात्र के स्तर व क्षमताओं के अनुरूप किया जाता है। इसमें शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक, परामर्शदाता की होती है।

भाषिक तत्वों- ध्वनि, शब्द और वाक्य के प्रयोगात्मक और क्रियात्मक शिक्षण के प्रमुख दो उपागम हैं-

(1) पाठ संसर्ग उपागम और

(2) रचना शिक्षण उपागम।

पाठ संसर्ग उपागम का तात्पर्य है- पाठ्यपुस्तक के पाठों को पढ़ाते समय यथासंभव भाषिक तत्वों (भाषा के तत्वों) की शिक्षा प्रदान करना, पाठ में प्रयुक्त शब्दों और वाक्यों के आधार पर उच्चारण, शब्दार्थ, शब्द रचना, वाक्य संरचना संबंधी दक्षताओं को विकसित करना। इसी प्रकार मौखिक और लिखित रचना शिक्षण में इन भाषिक तत्वों के ज्ञान और प्रयोग का प्रचुर अवसर मिलता है। भाषिक तत्वों के शिक्षण के उपर्युक्त दोनों उपागमों का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि भाषिक कार्य व्यावहारिक हो, विषय-वस्तु ग्रहण करने में सहायक हो, प्रसंगानुकूल हो और पाठ्यविषय अथवा रचना विकास से सम्बद्ध हो।

रचना शिक्षण उपागमः

भाषिक तत्वों के शिक्षण के लिए पाठ संसर्ग उपागम के अतिरिक्त 'रचना शिक्षण उपागम' भी एक सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से भी उच्चारण शिक्षण, वर्तनी शिक्षण, शब्द शिक्षण और वाक्य शिक्षण के अच्छे अवसर मिलते हैं।

रचना के दो रूप हैं- मौखिक रचना और लिखित रचना। मौखिक रचना में उच्चारण शिक्षण का अधिक अवसर मिलता है और लिखित रचना में वर्तनी शिक्षण का।

भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत

रुचि जाग्रत करने का सिद्धान्तः

छात्र के लिए शिक्षण उस समय तक प्रभावी नहीं होगा जब तक उसमें सीखने के लिए इच्छा एवं रुचि जाग्रत न हो जाए। किसी वस्तु एवं सामग्री पर हमारा ध्यान तभी केन्द्रित हो पाता है जब हमारी उसमें रुचि हो। अतः छात्र की शिक्षण में रुचि को जाग्रत करना आवश्यक है।

प्रेरणा का सिद्धान्तः

रुचि जाग्रत होने पर अधिगम की प्रेरणा मिलती है और प्रेरणा से ही छात्र में रुचि का विकास होता है। रुचि, आवश्यकता और प्रयोजन शिक्षा की दृष्टि से उपयोगी प्रेरक हैं। उद्देश्यहीन, प्रयोजन रहित कार्य मानसिक शिथिलता उत्पन्न कर देता है।

क्रिया द्वारा सीखने का सिद्धान्तः

जो कुछ छात्र को सिखाया जाए, वह उसको निष्क्रिय दर्शक बनकर नहीं सुने अपितु उसमें उसकी सक्रिय प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाए । छात्र को भी सीखने में उसी समय आनंद आता है जब वह क्रिया द्वारा अपने आप सीखता है।

जीवन से जोड़ने का सिद्धान्तः

इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी विषय को पढ़ाते समय यह विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वह जीवन में आने वाली परिस्थितियों से संबंधित है या नहीं । छात्र उन बातों, विषयों को सरलता से सीख लेता है जो उसके जीवन से संबंधित होते हैं। इसी दृष्टि से भाषा शिक्षण में छात्र के अपने अनुभवों को उदाहरणार्थ लेने से छात्र को भाषा की जटिलता समझने में आसानी होती है ।

उद्देश्यपूर्ण शिक्षण का सिद्धान्तः

शिक्षण उद्देश्यपूर्ण हो। बिना उद्देश्य के शिक्षण सफल नहीं हो सकता। इसी प्रकार पाठ्य सामग्री उद्देश्योन्मुख हो । शिक्षक पाठ्य सामग्री का चुनाव इस प्रकार करें कि वह शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा कर सके।

विभाजन का सिद्धान्तः

यह सिद्धान्त इस बात पर जोर देता है कि पाठ्यक्रम को कितनी इकाइयों अथवा पाठों में बाँटा जाए ताकि छात्र सरलता से एक स्तर से दूसरे स्तर पर जा सके ।

पुनरावृत्ति का सिद्धान्तः

पठित सामग्री की उपयुक्त पुनरावृत्ति से छात्र का अधिगम दृढ़ होता है और साथ में उसमें स्पष्टता भी आती है ।

स्वाभाविकता विधि के अनुसरण का सिद्धान्तः

भाषा सीखना एक सहज प्रवृत्ति है और छात्र मातृभाषा को उसी साहजिक प्रवृत्ति से श्रवण, अनुकरण, ग्रहण और अभ्यास की प्रक्रिया द्वारा सीख लेता है। इस प्रक्रिया में पहले 'सुनना और समझना', 'उच्चारण करना और बोलना' क्रम स्वाभाविक है । इसके बाद वह 'पढ़ना और लिखना' सीखता है। शिक्षण में हमें इसी स्वाभाविक क्रम को अपनाना चाहिए। सबसे पहले छात्र को शुद्ध, स्पष्ट भाषा सुनने को मिले जिसका वह अनुकरण करे। इससे भाषा सीखने की पहली प्रक्रिया 'सुनकर समझना' का अभ्यास होगा। फिर उसे बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

बोलने में उच्चारण के अतिरिक्त वाक्यों की शुद्धता पर भी बल देना चाहिए। यह स्पष्ट है कि वाक्य ही भाषा की इकाई है। छात्र अपना भाव प्रकट करना चाहता है और इसके लिए उसे वाक्य या वाक्यों का ही आश्रय लेना पड़ता है। उसकी रुचि शब्दों एवं ध्वनियों में नहीं रहती है। अतः वाक्य से भाषा की शिक्षा प्रारंभ होनी चाहिए, फिर शब्दों और ध्वनियों की ओर बढ़ना चाहिए। सुनने और बोलने की शिक्षा के बाद पढ़ने और लिखने का क्रम अपनाना स्वाभाविक विधि होगी।

क्रियाशीलता का सिद्धान्तः

भाषा सीखना एक कला है। भाषा सतत प्रयोग, अभ्यास और व्यवहार से आती है। किसी भी कला को सीखने की दो विधियाँ हैं -

- उसके सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करके
- अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा स्वयं प्रयोग और अभ्यास द्वारा।

मौखिक कार्य अथवा बोलचाल का सिद्धान्तः

भाषा सीखने में बोलने की क्रिया का सबसे अधिक महत्व है । अतः छात्र चाहिए को भावाभिव्यक्ति के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिए । बोलने का अभ्यास भाषा सीखने का आधार है और कक्षा में पढ़ते समय बालकों को इसका प्रचुर अवसर मिलना चाहिए। बोलने पर ही शुद्ध उच्चारण, बलाघात, स्वराघात, आरोह-अवरोह आदि के उचित अभ्यास का अवसर मिलता है और भाषा पर अधिकार प्राप्त होता है। जिस भाषा में बोलने का अभ्यास हो जाता है, वह भाषा कभी भूली नहीं जाती ।

शुद्धता :

प्रारंभिक अवस्था में छात्र श्रवण, निरीक्षण, अनुकरण आदि द्वारा ही भाषा सीखता है, इसलिए यह बहुत ही आवश्यक है कि उसके सम्मुख जिस भाषा का व्यवहार किया जाए, वह शुद्ध और निर्दोष हो। छात्र जिस प्रकार की भाषा को सुनता है, उसी का अनुकरण करता है। अतः शिक्षक को सदैव व्याकरण सम्मत परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

भाषा के विविध अंगों का सापेक्षिक समन्वयः

भाषा परस्पर सम्बद्ध अनेक अवयवों का सुसंश्लिष्ट रूप है। अतः भाषा शिक्षण में सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कोई अंग या अवयव उपेक्षित न रह जाए। उदाहरणार्थ यदि उच्चारण दोष रह जाता है तो छात्र का समग्र भाषा व्यवहार दोषपूर्ण हो जाता है। अतः भाषा शिक्षण में भाषा और साहित्य की सभी अपेक्षित योग्यताओं का उचित अनुपात और उनका सापेक्षिक समन्वय एक सामान्य सिद्धान्त है।

क्रमयोजन का सिद्धान्तः

भाषा शिक्षण में विषय-सामग्री का उपयुक्त क्रमयोजन आवश्यक है क्योंकि इससे विद्यार्थियों के भाषा-ज्ञान में उत्तरोत्तर स्वाभाविक रूप से वृद्धि होती हैं और विषय सामग्री को ग्रहण करने में सुगमता भी होती है। इस दृष्टि से निम्नांकित बातें ध्यान देने योग्य हैं

- पाठों के चयन में पहले सरल पाठ पढ़ाएँ जाएँ, फिर कठिन।
- पर्यायवाची शब्दों में पहले सरल, प्रचलित शब्द बताएं जाएँ। शब्दार्थ के बाद शब्द-रचना का ज्ञान कराया जाए।

इसमें अक्षरों को छोटे – छोटे टुकड़ों में विभाजित कर दिया जाता है। तथा पुनः उसका सही योग करके पूर्ण अक्षर का ज्ञान कराया जाता है।

अनुकरण विधि

इस विधि में शिक्षक ब्लैक बोर्ड्स पर आगे लिख देता है। तो छात्र भी लेख का अनुकरण करके सही प्रकार लिखने का पूरा प्रयास करते हैं।

स्वतन्त्र लेखन विधि

इस विधि में बिना वर्ण देखे या बिना नकल किये छात्र से उसकी मानसिक चित्र छाया के अनुसार लिखवाया जाता है। कुशाग्रबुद्धि छात्र इसे बहुत कम समय में सीख लेते हैं।

अध्याय - 7

भाषा बोध (सुनना, बोलना, पढना एवं लिखना) में प्रवीणता का मूल्यांकन

- **भाषा शिक्षण में मूल्यांकन**

बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों के विकास – स्तर का सही – सही मूल्य आँकने के लिए शिक्षाविदों नए एक नवीन उपागम को अपनाया है, जिसे "मूल्यांकन" की संज्ञा दी गई है ।

मूल्यांकन –

मूल्यांकन एक सतत चलने वाली व् उद्देश्यप्रद प्रक्रिया है जिसकी प्रकृति सुधारात्मक होती है । मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थी के सन्दर्भ में शैक्षिक परिणामों एवं प्रगति की जाँच की जाती है । इसके द्वारा शैक्षिक परिस्थितियों तथा इसमें प्रयोग की जाने विधियों एवं साधनों की उपादेयता की जाँच की जाती है ।

परिभाषा –

ब्लूम की अनुसार – "मूल्यांकन योग्यता नियंत्रण की व्यवस्था है जिसमें शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता की जाँच होती है ।

कोठारी आयोग के अनुसार – मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है जो शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा शिक्षण उद्देश्यों के साथ घनिष्ठ संबंध है ।

मूल्यांकन के प्रकार –

शिक्षा व्यापार को व्यापक सन्दर्भ में रखकर उसके तीन निश्चित चरण माने जाते जा सकते है : पाठपूर्व, पाठप्रक्रिया और पाठपश्च और तद्नुरूप भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में नियोजित विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन को भी वर्गीकृत किया जाता है ।

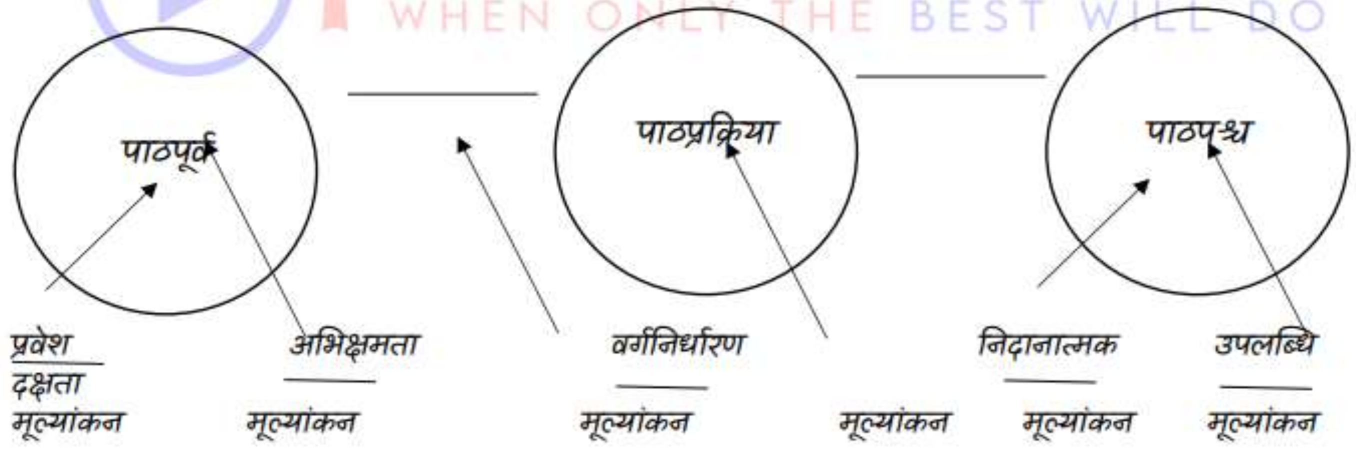

मूल्यांकन की विशेषताएँ –

मूल्यांकन शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है, इसके माध्यम से यह ज्ञात किया जाता

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/cs2iro 1 web.- https://rb.gy/gejnn0

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
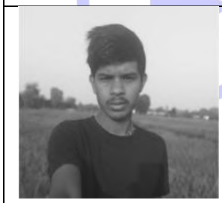	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
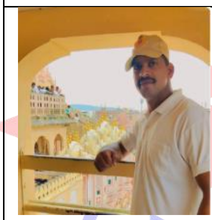	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/cs2iro

Online order करें – https://rb.gy/gejnn0

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE